Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

आचार्य पाणिनि अभिमत प्रमेय

सोहन आर्य
सहायक आचार्य, दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर

Article Info
Volume 6, Issue 4
Page Number : 01-04
Publication Issue :
July-August-2023
Article History
Accepted : 01 July 2023
Published : 09 July 2023

शोधसार – व्याकरणशास्त्र में बहुत्र दार्शनिक बीजों का, प्रमेयों का, प्रमाणों का उल्लेख प्राप्त होता है। उसी क्रम में आचार्य पाणिनि के अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ में भी दो प्रमेयों का उल्लेख प्राप्त होता है – शब्द एवं अर्थ। इनके परवर्त्ती वैयाकरणदार्शनिकों नें एक तीसरा प्रमेय भी स्वीकार किया है – शब्दार्थसम्बन्धप्रमेय। यह पाणिनि के ग्रन्थ में दृष्टिपथ नहीं आता है।

मुख्य शब्द : आचार्य पाणिनि, दार्शनिक, अष्टाध्यायी, शब्द, अर्थ, ग्रन्थ।

व्याकरणशास्त्र की परम्परा प्राचीन काल से ही अक्षुण्ण प्रवाह के साथ चलती चली आ रही है परन्तु यह परम्परा त्रिमुनियों के द्वारा तब उत्कर्ष को प्राप्त हुई जब व्याकरणशास्त्र के विलक्षण तत्त्वों का सम्यग् अनुसन्धान करके दर्शन शास्त्र के साथ प्रतिष्ठापित किया गया। सामान्यत: सब यही स्वीकार करते हैं कि महर्षि पतञ्जलि नें ही व्याकरण के दर्शन सामग्रियों को हमारे सम्मुख स्थापित किया तथा तत्पश्चात् आचार्य भर्तृहरि नें व्याकरणदर्शन का स्वरूप स्थापित किया। परन्तु ऐसा नहीं है।

महर्षि पतञ्जलि से पूर्व ही आचार्य पाणिनि नें व्याकरणशास्त्र के आधार ग्रन्थ अष्टाध्यायी में बहुलश: दर्शनबीजों, प्रमाणों, प्रमेयों का उल्लेखन किया है, जिसको आधार बनाकर व्याकरणदर्शनरूपी कल्पद्रुम पुष्पित एवं पल्लवित हो सका है। अष्टाध्यायी एक सूत्र ग्रन्थ है अत: इसमें विस्तार रूप से प्रमेयों की चर्चा नहीं प्राप्त हो सकी है परन्तु सभी प्रमेयों का सङ्केत अवश्य ही समुपलब्ध होता है।

आचार्य पाणिनि नें दो प्रमेयों का उल्लेख किया है – शब्द एवं अर्थ। **स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा**[1] इस सूत्र में स्वम् पद से शब्द तथा रूपम् पद से **रूप्यते – बोध्यते असौ** इस विग्रह के अनुसार अर्थ का ग्रहण होता है। यहां एक बात अवश्य ध्यातव्य है कि महाभाष्यकार पतञ्जलि **सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे**[2] के अनुसार शब्दार्थ का सम्बन्ध भी तृतीय प्रमेय मानते हैं। हम इस शोध लेख में तीनों को उल्लेखित करेगें।

[1] अष्टाध्यायी – 1/1/68

[2] महाभाष्यपस्पशान्हिकम्

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शब्दप्रमेय – महर्षि पाणिनि ने धातुपाठ में **शब्द उपसर्गादाध्विकारे च**[3] इस सूत्र के माध्यम से शब्द धातु स्वीकार की है। शब्द यह पद **शब्द्यते असौ** इस विग्रहानुसार निष्पन्न होता है। शब्द का लक्षण महाभाष्यकार नें इस तरह किया है –

येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति सः शब्दः।[4]

इस प्रकार **यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्** इस न्यायबल के सामर्थ्य से उत्तरोत्तर पूर्वपूर्वमुनियों के तात्पर्य से महर्षि पाणिनि भी उक्त शब्द लक्षण ही स्वीकार करते हैं, ऐसा माना जा सकता है। परन्तु पाणिनीयशिक्षा में एक श्लोक उद्धृत है –

आकाशवायुप्रभवः शरीरात् समुच्चरन् वक्त्रमुपैति नादः।
स्थानान्तरेषु प्रविभज्यमानो वर्णत्वमागच्छति यः स शब्दः।।[5]

आचार्य पाणिनि प्रणीत अष्टाध्यायी में शब्द प्रमेय से सम्बन्धित चार सूत्र प्राप्त होते हैं –

1. **स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा।**[6]
2. **वचोऽशब्दसंज्ञायाम्।**[7]
3. **शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे।**[8]
4. **व्यक्तवाचां समुच्चारणे।**[9]

अष्टाध्यायी में शब्द यह पद पारिभाषिक एवं अपरिभाषिक दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है। **स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा** इस सूत्र के द्वारा यह नियमित किया जाता है कि विधिस्थलों में शब्दशास्त्रीय पारिभाषिक संज्ञा को छोड़कर और हर जगह उच्चारित शब्द के भाषिक स्वरूप का भी ग्रहण होता है परन्तु **अग्नेर्ढक्**[10] इत्यादि में अग्नि इस पद से तात्पर्यवाची का भी ग्रहण प्राप्त होने पर उक्त सूत्र से नियमन होता है कि शब्दशास्त्र में शब्द का अपना रूप ही संज्ञी होता है। इस सूत्र में शब्द पद शब्द प्रमेय के पारिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त होता है।

इसी प्रकार **वचोऽशब्दसंज्ञायाम्** इस सूत्र में वच् धातु से अशब्द संज्ञा में वाच्यम् शब्द निष्पन्न होता है तथा शब्द संज्ञा में वाक्यम् शब्द निष्पन्न होता है। इस सूत्र में शब्द पद अर्थाभिधान की दृष्टि से **येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति** इस लक्षण से मानवीय वाक्तत्व अर्थ में परिलक्षित होता है परन्तु **शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे** इस सूत्र में प्रयुक्त शब्द पद अर्थाभिधानसमर्थ तथा अर्थाभिधानासमर्थ श्रवणेन्द्रियग्राह्य ध्वनि मात्र का ग्रहण कराता है।

---

[3] धातुपाठ – चुरादिगण
[4] महाभाष्यपस्पशान्हिकम्
[5] पाणिनीयशिक्षा
[6] अष्टाध्यायी – 1/1/68
[7] अष्टाध्यायी – 7/3/67
[8] अष्टाध्यायी – 3/1/17
[9] अष्टाध्यायी – 1/3/48
[10] अष्टाध्यायी – 4/2/33

व्यक्तवाचां समुच्चारणे इस सूत्र में आचार्य व्यक्त तथा अव्यक्त वाक् के भेद का प्रस्तुतिकरण कर रहे हैं। सुस्पष्टवर्णात्मक तथा अर्थावगति होने से व्यक्त वाक् मानवीय वाक् कहलाती है। इससे विपरीत अर्थात् मनुष्येतर वाग् अव्यक्त कहलाती है। यद्यपि तोता मुर्गा आदि के उच्चारण की पृथक् – पृथक् प्रतीति होती है तथापि वर्णात्मक बोध नहीं होता है, वह तो हमारे प्रयत्न से व्यक्त है न कि स्वाभाविक।

शब्दभेद – सुप्तिङन्तं पदम् इत्यादि पाणनीय सूत्र के द्वारा परिनिष्ठित शब्दों की पद संज्ञा होने से शब्द की पद नामक दूसरी संज्ञा होती है। इसके निम्नोल्लिखित भेद हैं –

1. **अव्यय –** सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
   वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम्।।[11]
2. **निपात –** अष्टाध्यायी में **चादयोसत्वे**[12] सूत्र से प्रारम्भ करके **अधिरीश्वरे**[13] इस सूत्र पर्यन्त सूत्रों में पठित शब्द निपात कहलाते हैं।
3. **उपसर्ग –** प्र आदि क्रिया के योग में उपसर्ग संज्ञक होते हैं। ये उपसर्ग आचार्य पाणिनि के मत में 22 हैं परन्तु ऋक्प्रातिशाख्य आदि 20 ही मानते हैं।
4. **कर्मप्रवचनीय –** कर्मप्रवचनीयाः इस सूत्र के अधिकार के अन्तर्गत जितने भी प्र आदि उपसर्ग आते हैं, वे कर्मप्रवचनीय कहलाते हैं।

अर्थप्रमेय – वैय्याकरणों की प्रवृत्ति सार्थक शब्दों में ही होती है। वार्त्तिककार नें कहा भी है – **सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे** अर्थात् शब्द, अर्थ और शब्दार्थ का सम्बन्ध नित्य है। इस प्रकार तीनों के नित्य होने से अर्थ के बिना शब्द की स्थिति ही सिद्ध नहीं होती है। अर्थ शब्द के वैसे तो निवृत्ति, धन, प्रयोजन आदि अनेक अर्थ हैं तथापि यहाँ अभिधेयार्थ अर्थ शब्द अपेक्षित है।

उषिकुषिगार्तिभ्यस्थन् इस उणादि सूत्र से, ऋ धातु से **अर्यते – प्राप्यते असौ** इस विग्रह के अनुसार थन् प्रत्यय करने पर अर्थ शब्द निष्पन्न होता है। शब्द श्रवण के पश्चात् ही अभिधेय अर्थ प्राप्त होता है। अर्थ प्रमेय को अधिकृत करके आचार्य पाणिनि नें दो सूत्रों का निर्माण किया –

1. **अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।**[14]
2. **प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात्।**[15]

यहाँ **अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्** इस सूत्र में प्रयुक्त अर्थ शब्द अभिधेय वचन के रूप में है। यहाँ पर बौद्धार्थ मन्तव्य है न कि बाह्यार्थ। यह स्पष्ट है कि वैय्याकरण बौद्धार्थवादी हैं। यदि बाह्यार्थ को अभिधेय के रूप में स्वीकार किया जाए तो अभाव वन्ध्यापुत्र, शशविषाण आदि में प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती है तथा घटोस्ति, घटो नास्ति ये सब प्रयोग भी दोनों के परस्पर विरोध के कारण उत्पन्न नहीं होते हैं।

---

[11] वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (अव्ययप्रकरणम्)

[12] अष्टाध्यायी – 1/4/57

[13] अष्टाध्यायी – 1/3/97

[14] अष्टाध्यायी – 1/2/45

[15] अष्टाध्यायी – 1/2/56

प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात् इस सूत्र में प्रयुक्त अर्थ शब्द शब्दों के बाह्यार्थ को अभिलक्षित करता है। इस सूत्र से आचार्य प्रधानप्रत्ययार्थ व्यवस्था का निराकरण करते हैं। इस सूत्र की अर्थ कुछ इस प्रकार है कि – प्रधानार्थवचन तथा प्रत्ययार्थवचन अर्थात् यह पद प्रधान है तथा यह पद अप्रधान है एवं यह प्रत्यय इस अर्थ में आता है, अर्थ के लोक के अधीन होने से यह पूरा पूरा नहीं कहा जा सकता है। यह अर्थ छः प्रकार का होता है – स्वार्थ, द्रव्य, लिङ्ग, संख्या, कारक, शब्द। इसी को महाभाष्यकार भी इंगित करते हैं –

स्वार्थमभिधाय शब्दो निरपेक्षो द्रव्यमाह समवेतम्।

समवेतस्य च वचने लिङ्गं वचनं विभक्तिञ्च।।[16]

वस्तुतः अर्थ पद से जिनकी भी पदजन्य प्रतीति होती है, उन सभी का ग्रहण होता है और यह संसार में सभी विद्यमान पदार्थों में है ही। अतः शब्दसम्बन्धी से अतिरिक्त सभी पदार्थ इस पाणिनि शास्त्र में अर्थ प्रमेय के अन्तर्गत आ जाते हैं। जिस प्रकार भाव पदार्थ अर्थप्रमेय के अन्तर्गत आते हैं उसी प्रकार अभाव पदार्थ भी क्योंकि आचार्य पाणिनि नें **अदर्शनं लोपः**[17] इस सूत्र से अभाव की लोप संज्ञा का विधान किया है। शास्त्र की अपेक्षा से यह अथ शब्द लोक को कहता है। यह अर्थ दो प्रकार का होता है – लौकिक एवं शास्त्रीय। लौकिक के सन्दर्भ में लोक ही प्रमाण है, जैसा कि **प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात्** इस सूत्र ने समझाया परन्तु शास्त्रीय अर्थ तीन प्रकार का होता है – प्रातिपदिकार्थ, प्रत्ययार्थ तथा धात्वर्थ। पूर्व में मैनें कहा था कि सभी जागतिक पदार्थों का पदजन्यप्रतीतिविषय होने के कारण अर्थप्रमेय में ही समावेश है। यहां यह कहा जा सकता है कि वैशेषिक न्याय द्वारा स्वीकृत पदार्थ कहीं – कहीं सङ्कोच तथा विस्तार से स्वीकृत हैं तथा कुछ उनसे अतिरिक्त भी।

सम्बन्धप्रमेय – शब्द एवं अर्थ के सम्बन्ध के विषय में महर्षि पाणिनि नें स्पष्टतः कहीं उल्लेख नहीं किया है परन्तु अन्य वैयाकरणदार्शनिकों नें भूरिशः चर्चाएँ की हैं। अतः **यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यं** इसका अनुसरण करके आचार्य कात्यायन ने वार्त्तिक उपस्थापित किया कि – **सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे।** अर्थात् शब्द, अर्थ एवं उनका सम्बन्ध नित्य होता है। यहाँ सिद्ध शब्द नित्यपर्यायवाची का बोधक है। संसार में दृष्टिगोचर होता है कि अभ्यासादि के द्वारा उत्पन्न संस्कार ही शब्दों के अर्थों को उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार शब्द अर्थ नित्य हैं तथापि किस शब्द से किस अर्थ का ज्ञान हो इसके लिए सम्बन्ध आवश्यक हो जाता है।

सन्दर्भितग्रन्थसूची –

1. अष्टाध्यायी , भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस
2. धातुपाठ – चुरादिगण , चौखम्बा संस्कृत सिरीज ऑफिस, वाराणसी
3. पाणिनायशिक्षा – व्या. – डॉ, राकेश शास्त्री, चौखम्बा ओरियन्टालिया, दिल्ली
4. महाभाष्यपस्पशान्हिकम् , व्या. – युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत, हरियाणा
5. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (अव्ययप्रकरणम् , चौखम्बा ओरियन्टालिया, दिल्ली

[16] महाभाष्यम् – पा.सू. – 5/3/74

[17] अष्टाध्यायी – 1/1/60